न्यूज़ टुडे

ब्राज़ील और फ्रांस ने ब्लू नेशनली डिटरमाइंड कंट्रिब्यूशंस (NDCs) चैलेंज लॉन्च किया

ब्राजील और फ्रांस के अलावा 6 अन्य देश पहले ही इस पहल में शामिल हो चुके हैं। ये 6 देश हैं - **ऑस्ट्रेलिया, फिजी, केन्या, मैक्सिको, पलाऊ और सेशेल्स**। इस प्रकार यह आरंभिक **8 देशों का समूह** बन गया है।

ब्लू NDC चैलेंज के बारे में

- यह सभी देशों से COP-30 से **पहले महासागर** को अपने NDCs यानी **"राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों के केंद्र में रखने"** का आह्वान करता है।
- **समर्थन:** इस पहल को **ओशन कन्ज़र्वेंसी, द ओशन एंड क्लाइमेट प्लेटफॉर्म तथा वर्ल्ड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट थ्रू द ओशन रेसिलिएंस एंड क्लाइमेट अलायन्स** द्वारा समर्थन प्राप्त है।

जलवायु संकट से निपटने में महासागर की भूमिका

- **कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण:** महासागर पृथ्वी के सबसे महत्वपूर्ण कार्बन सिंक में से एक हैं। ये **वैश्विक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन का लगभग 30% अवशोषित** करते हैं।
  - **मैंग्रोव और समुद्री घास** जैसे तटीय पर्यावास स्थलीय वनों की तुलना में **चार गुना अधिक दर पर कार्बन को अवशोषित** करते हैं।
- **ताप विनियमन:** यह ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन से उत्पन्न अतिरिक्त **गर्मी का लगभग 90% हिस्सा अवशोषित** करते हैं।
- **नवीकरणीय ऊर्जा:** अपतटीय पवन ऊर्जा में **वैश्विक विद्युत की एक तिहाई से अधिक आवश्यकताओं को पूरा** करने की क्षमता है।

महासागरीय पारिस्थितिकी-तंत्र की सुरक्षा के लिए वैश्विक पहलें

- **समुद्री संरक्षित क्षेत्र (MPAs):** ये संरक्षण के लिए निर्दिष्ट क्षेत्र होते हैं। यहां समुद्री जीवन की सुरक्षा के लिए कुछ गतिविधियों को प्रतिबंधित किया जाता है।
- **संयुक्त राष्ट्र का सतत विकास के लिए महासागर विज्ञान दशक (2021-2030):** इसका उद्देश्य महासागरीय पारिस्थितिकी-तंत्र में आ रही गिरावट को रोकने के लिए महासागर विज्ञान को प्रोत्साहित करना और सतत विकास को बढ़ावा देना है।
- **भारतीय पहलें:** मिष्टी/ MISHTI (मैंग्रोव इनिशिएटिव फॉर शोरलाइन हैबिटेट्स एंड टैंजिबल इनकम), डीप ओशन मिशन आदि।

UNFPA स्टेट ऑफ वर्ल्ड पॉपुलेशन, 2025: "द रियल फर्टिलिटी क्राइसिस" रिपोर्ट जारी की गई

रिपोर्ट में प्रजनन क्षमता में गिरावट से घबराने की बजाय, उन लोगों की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए, जो अपने प्रजनन लक्ष्यों को प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **प्रजनन संकट:** वास्तविक मुद्दा अधिक जनसंख्या नहीं है, बल्कि विकल्प की कमी के कारण वांछित परिवार आकार प्राप्त करने में असमर्थता है।
- **फर्टिलिटी डुअलिटी:** कुछ राज्यों **(बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड आदि)** में प्रजनन दर **काफी अधिक है,** जबकि अन्य राज्यों **(दिल्ली, केरल, तमिलनाडु आदि) में प्रतिस्थापन प्रजनन दर (2.0) से कम** है।
- **प्रजनन स्वतंत्रता में बाधाएं**
  - **वित्तीय बाधाएं:** 10 में से 4 लोग वित्तीय सीमाओं को एक बड़ी बाधा मानते हैं।
  - **संरचनात्मक चुनौतियां:** नौकरी की असुरक्षा (21%), आवास से जुड़ी बाधाएं (22%), और बच्चों की देखभाल की कमी (18%) परिवार नियोजन में बाधा डालती हैं।
  - **सामाजिक दबाव:** 19% लोग कम बच्चे पैदा करने के लिए परिवार/ साथी के दबाव का सामना करते हैं।
  - **आधुनिक सोच:** जलवायु परिवर्तन, राजनीतिक अस्थिरता, अकेलापन और बदलते लैंगिक मानदंड निर्णयों को प्रभावित करते हैं।
- **भारत की प्रगति और लगातार बढ़ रही असमानता**
  - बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के कारण प्रजनन दर 5 (1970) से घटकर 2 (2025) रह गई है।
  - **अंतर अभी भी बना हुआ है:** राज्यों, जातियों और आय समूहों में असमानताएं प्रजनन अधिकारों को सीमित करती हैं।

भारत के लिए UNFPA की सिफारिशें

- **लैंगिक और प्रजनन स्वास्थ्य (SRH) सेवाओं का विस्तार:** गर्भनिरोधक, सुरक्षित गर्भपात और बंध्यता देखभाल तक सार्वभौमिक पहुंच।
- **संरचनात्मक बाधाओं को दूर करना:** किफायती बाल देखभाल, शिक्षा, आवास और लचीली कार्य नीतियों के विकास पर फोकस करना।
- **समावेशी नीतियां:** LGBTQIA+, अविवाहित व्यक्तियों और हाशिए पर रहे समूहों तक सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना।

UNFPA के बारे में

- इसे **1969 में जनसंख्या गतिविधियों के लिए संयुक्त राष्ट्र कोष (UNFPA)** के रूप में स्थापित किया गया था।
- **वर्ष 1987** में इसका नाम बदलकर **संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष** कर दिया गया। हालांकि, मूल संक्षिप्त नाम, UNFPA को बरकरार रखा गया।
- **मुख्य मिशन**
  - UNFPA सभी के लिए लैंगिक और प्रजनन अधिकारों एवं विकल्पों की गारंटी देने के लिए काम करता है।
  - महिलाओं और युवाओं को अपने शरीर के बारे में सूचनाओं पर आधारित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाता है।

केंद्रीय आवासन और शहरी विकास मंत्रालय (MoHUA) ने स्मार्ट सिटी "स्पेशल पर्पज व्हीकल्स" (SPVs) के पुनर्गठन के लिए सुझाव आमंत्रित किए

केंद्र सरकार ने निर्णय लिया है कि **स्मार्ट सिटीज़ मिशन (SCM) की अवधि की समाप्ति (31.03.2025) के बाद भी SPVs** कार्य करना जारी रखेंगे।

- ध्यातव्य है कि **स्मार्ट सिटीज़ मिशन की अवधि 31 मार्च, 2025 को समाप्त** हो गई है।

स्पेशल पर्पज व्हीकल्स (SPVs) के बारे में

- **शुरुआत:** SPVs का गठन **कंपनी अधिनियम, 2013** के तहत सभी 100 चयनित शहरों में **स्मार्ट सिटीज़ मिशन के तहत "कंपनियों"** के रूप में किया गया था।
  - **स्मार्ट सिटीज़ मिशन** वर्ष **2015 में शुरू** किया गया था। इस मिशन का लक्ष्य **100 चयनित शहरों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार** करना था। इसके लिए **प्रभावी सेवाएं, मजबूत अवसंरचना तथा संधारणीय और स्वच्छ वातावरण** प्रदान करने पर जोर दिया जाता है।
- **स्वामित्व:** SPVs का स्वामित्व राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश की सरकारों और नगर निकायों (ULBs) के पास 50:50 के अनुपात में है।
- **संरचना:** प्रत्येक SPV का अध्यक्ष पूर्णकालिक मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) होता है। इसके **बोर्ड में केंद्र सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय नगर-निकाय के प्रतिनिधि** शामिल होते हैं।
- **उद्देश्य:** SPVs को **केंद्रित योजना, परियोजना विकास और जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन** के माध्यम से स्मार्ट सिटीज़ मिशन को **लागू करने का दायित्व** सौंपा गया है।
  - मार्च 2025 तक, **8,000 से अधिक स्मार्ट सिटीज़ मिशन परियोजनाओं में से 93% से अधिक पूरी** हो चुकी थी। **परियोजना के लिए आवंटित 48,000 करोड़ रुपये के बजट का 99.44% वितरित** किया जा चुका है।

पुनर्गठित SPVs के भविष्य के कार्यक्षेत्र

- **प्रौद्योगिकी के रूप में समर्थन:** SPVs स्थानीय नगर-निकायों को **साइबर हाइजीन, एनालिटिक्स और डेटा सिस्टम में प्रबंधन में सहायता** कर सकते हैं।
- **परियोजना के कार्यान्वयन में मदद:** SPVs लाभकारी परियोजनाओं का विकास और कार्यान्वयन कर सकते हैं। इसके बदले में **राज्य के मानदंडों के अनुसार 1.5%–3% तक का कार्यान्वयन शुल्क** भी वसूल कर सकते हैं।
- **अनुसंधान और मूल्यांकन कार्य:** SPVs मूल्यांकन, लॉजिस्टिक्स और समन्वय के माध्यम से साक्ष्य-आधारित योजना निर्माण में सहायता कर सकते हैं।
- **निवेश आकर्षित करने में मदद:** SPVs परियोजना के संरचना-निर्माण, खरीद प्रक्रियाओं और सरकारों के बीच समन्वय के माध्यम से स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री ने मानसून से पहले बाढ़ से निपटने की तैयारियों और इसके खतरे को कम करने की रणनीतियों की समीक्षा की

हाल ही में, **केंद्रीय गृह मंत्री** ने भारत में आपदा प्रबंधन के तहत **"जीरो कैजुअल्टी अप्रोच"** अपनाने और **बाढ़ नियंत्रण में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग** करने की आवश्यकता पर बल दिया।

बाढ़ से निपटने के प्रबंधन के लिए प्रमुख निर्देश

- **एक-जैसा सड़क डिज़ाइन:** विशेषकर राज्य और जिला राजमार्गों के लिए **सड़क डिज़ाइनों में जल निकासी की व्यवस्था एकीकृत** की जानी चाहिए।
- **नदी घाटियों में वनावरण का विस्तार:** नर्मदा नदी घाटी में वनावरण में वृद्धि से **इस घाटी को उसकी प्राकृतिक अवस्था में वापस** लाया जा सकता है, **मृदा अपरदन में कमी** की जा सकती है, आदि।

'बाढ़ से निपटने के प्रबंधन' के बारे में

- **बाढ़ की परिभाषा:** 'जब जल का स्तर इतना बढ़ जाए कि वह अपने प्राकृतिक या कृत्रिम तटबंधों या तटों को पार कर आमतौर पर सूखी भूमि पर फैल जाए, जैसे कि नदी अपने बाढ़ के मैदानी क्षेत्र को डुबो दे", तो उसे बाढ़ या फ्लड कहते हैं।
- **संवैधानिक प्रावधान:** संविधान में **राज्य सूची (II) की प्रविष्टि-7** के अनुसार **बाढ़ नियंत्रण की प्राथमिक जिम्मेदारी राज्यों** की होती है।
- **बाढ़ से निपटने के प्रबंधन की संरचना:** इसमें आमतौर पर निम्नलिखित शामिल हैं:
  - **संरचनात्मक उपाय:**
    - **जलाशयों का निर्माण करके अतिरिक्त जल का भंडारण** किया जाता है। इससे बाढ़ के खतरे को कम किया जाता है।
      - उदाहरण के लिए- **दामोदर घाटी निगम के तहत कई बहुउद्देशीय बांधों** का निर्माण किया गया है।
    - **तटबंध का निर्माण:** बाढ़ के खतरे वाले राज्यों में ऐसे तटबंध बाढ़ से सुरक्षा प्रदान करते हैं।
      - उदाहरण के लिए- **बाढ़ प्रबंधन कार्यक्रम** के अंतर्गत 37,000 किलोमीटर से अधिक लंबे तटबंध बनाए गए हैं।
    - **डिटेंशन बेसिन/ आर्द्रभूमियों का संरक्षण:** प्राकृतिक गड्ढे, दलदली क्षेत्र, झील आदि अतिरिक्त जल को भंडारित करके बाढ़ के खतरों को कम करते हैं।
      - उदाहरण के लिए- **बिहार की मोकामा ताल आर्द्रभूमि।**
  - **गैर-संरचनात्मक उपाय:**
    - **फ्लड एरिया ज़ोनिंग:** इसके तहत **बाढ़ के खतरे वाले क्षेत्रों की पहचान करके उनमें सीमित विकास या निर्माण कार्यों की अनुमति** दी जाती है। इसका वास्तविक उद्देश्य **बाढ़ के मैदानी क्षेत्रों में बाढ़ से होने वाले नुकसान को कम** करना है।
    - **बाढ़ का पूर्वानुमान: केंद्रीय जल आयोग (CWC)** बाढ़ का पूर्वानुमान जारी करता है। यह **बाढ़ के खतरों या उससे होने वाले नुकसान को कम करने** का एक किफायती तरीका है।
      - पहले **अगले तीन दिनों** के लिए बाढ़ का पूर्वानुमान जारी किया जाता था, अब यह **अगले 7 दिनों** के लिए जारी किया जाता है।

बाढ़ से निपटने के प्रबंधन में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग

- **रीयल-टाइम आधार पर बाढ़ की निगरानी और मैपिंग:** जैसे—इसरो के राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (NRSC) ने केरल (2018) और असम (2022) में बाढ़ के दौरान प्रभावित क्षेत्रों के मानचित्र प्रदान किए थे।
- **बाढ़ पूर्व-चेतावनी प्रणाली: नेशनल हाइड्रोलॉजी प्रोजेक्ट (NHP) के तहत 'स्व-संचालित बाढ़ चेतावनी प्रणाली'** स्थापित की गई है।
  - यह प्रणाली **सैटेलाइट डेटा को भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) और केंद्रीय जल आयोग (CWC) के डेटा के साथ एकीकृत** करके बाढ़-पूर्वानुमान आधारित चेतावनियां जारी करती है।
- **बाढ़ आपदा ज़ोनिंग और प्लानिंग: सैटेलाइट के पुराने डेटा** का उपयोग करके **असम, बिहार, ओडिशा** जैसे राज्यों के लिए **बाढ़ प्रवण एटलस** जारी किए गए हैं।
  - जैसे—**बिहार के एटलस** का उपयोग करके बाढ़ के दौरान प्रभावित बस्तियों का किसी अन्य सुरक्षित जगह पर अस्थायी रूप से पुनर्वास कराया जाता है।
- **सैटेलाइट कम्युनिकेशन (SATCOM):** यह बाढ़ के दौरान आपदा से निपटने हेतु कनेक्टिविटी प्रदान करता है।
- **वेब-आधारित प्लेटफॉर्म:** राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (NRSC) के **भुवन (BHUVAN) जैसे प्लेटफॉर्म** राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) और राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों (SDMAs) को **बाढ़ से जुड़े डेटा प्रसारित** करते हैं।

RBI के डिप्टी गवर्नर के अनुसार, भारत का सूक्ष्म वित्त क्षेत्रक (Microfinance Sector) संकट में है

सूक्ष्म वित्त क्षेत्रक का **सकल ऋण पोर्टफोलियो (GLP) साल-दर-साल 13.9% गिर** गया है, जो उधारकर्ताओं के बढ़ते तनाव और कम ऋण देने को दर्शाता है।

- **ऋण के लिए सूक्ष्म वित्त (या माइक्रोक्रेडिट) क्या है:** विश्व बैंक के अनुसार, यह उन लोगों को छोटे पैमाने की वित्तीय सेवाएं प्रदान करना है, जिनकी पारंपरिक बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच नहीं है।

सूक्ष्म वित्त संस्थाओं (MFIs) के समक्ष चुनौतियां

- **पहुंच की उच्च लागत:** MFIs छोटे-छोटे ऋणों के माध्यम से दूरदराज और कम बैंकिंग वाले क्षेत्रों में सेवाएं प्रदान करते हैं।
  - भारत में लोगों तक MFIs की पहुँच अभी भी **8% बनी हुई है, जो बांग्लादेश के 65% से काफी कम** है।
- **उच्च ब्याज दरें:** MFIs 12%-30% तक ब्याज दर वसूलते हैं, जो बैंकों के 8%-12% से अधिक है।
  - निश्चित लेन-देन लागत और सीमित माला के कारण ब्याज दरें उच्च बनी रहती हैं।
- **शहरी गरीबों को अक्सर अनदेखा किया जाता है:** MFIs ग्रामीण गरीबों पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं; केवल 800 MFIs शहरी गरीबों को लक्षित करते हैं।
- **ऋण चूक:** कोई जमानत न होने और खराब जोखिम प्रबंधन के कारण अधिक ऋण चूक होती है।
  - 70% से अधिक भुगतान देर से होते हैं, जिससे नकदी प्रवाह और सततता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **बैंकों पर अत्यधिक निर्भरता:** MFIs का 80% वित्त-पोषण वाणिज्यिक बैंकों द्वारा किया जाता है।
- **उत्पाद विविधीकरण का अभाव:** MFIs द्वारा अपने समग्र ऋण का बड़ा भाग सूक्ष्म ऋण के रूप में दिया जाता है, जो इनके लाभांश को सीमित करता है।
  - **बीमा, बचत, विप्रेषण** जैसी अन्य सेवाएं MFIs द्वारा बहुत कम या नही के बराबर प्रदान की जाती हैं।

सरकार द्वारा की गई पहलें

- **सिडबी (SIDBI) की माइक्रो फाइनेंस योजना:** इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले NGOs/ MFIs को सिडबी से वित्त प्राप्त करने के लिए इक्विटी सहायता प्रदान करने की आवश्यकता होती है।
- **स्वयं सहायता समूह-बैंक लिंकेज कार्यक्रम (SHG-BLP):** यह कार्यक्रम **नाबार्ड (NABARD)** ने तैयार किया था। इसकी शुरुआत **1992** में की गई थी।

अरुणाचल प्रदेश जैव विविधता हॉटस्पॉट में एटालिन हाइड्रोपावर परियोजना को मंजूरी दी गई

वन सलाहकार समिति (FAC) ने एटालिन जलविद्युत परियोजना को "सैद्धांतिक स्वीकृति" दे दी है, जो एक उच्च संरक्षण मूल्य वाले क्षेत्र में स्थापित होने वाली है।

- **वन सलाहकार समिति (FAC) के बारे में**
  - **प्रकृति:** यह एक **वैधानिक** निकाय है। इसका गठन **वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 की** धारा-3 के प्रावधानों के तहत किया गया है।
  - **कार्य:** इसका कार्य **वन भूमि को गैर-वन उपयोग (जैसे खनन)** के लिए डायवर्ट करने के मामलों में सलाह देना है। इसकी सिफारिशें **सलाहकारी प्रकृति** की होती हैं।

एटालिन हाइड्रोपावर परियोजना के बारे में

- **अवस्थिति:** यह **अरुणाचल प्रदेश में दिबांग घाटी** में है। यह **पूर्वी हिमालय वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट** का हिस्सा है, जो ऐसे **36 वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट्स में से एक** है।
- **नदियां:** इस परियोजना में **दो ग्रेविटी बांध** होंगे: एक **द्री नदी** पर और **दूसरा तालो (टंगोन)** नदी पर।
- **क्षमता:** 3,097 मेगावाट।

एटालिन जलविद्युत परियोजना के प्रभाव

- **पर्यावरणीय प्रभाव:**
  - **वनों की कटाई:** इस परियोजना के कारण **2.7 लाख पेड़ों की कटाई** होगी और **1100 हेक्टेयर** से अधिक अवर्गीकृत वन भूमि का डायवर्जन होगा।
  - **जैव विविधता:** इस क्षेत्र में **लगभग 6 वैश्विक रूप से संकटग्रस्त स्तनपायी प्रजातियां** पाई जाती हैं। इनमें से **3 एंडेंजर्ड हैं और 3 वल्नरेबल** श्रेणी में हैं।
    - यहां **भारत की कुल पक्षी प्रजातियों का 56%** हिस्सा पाया जाता है।
    - इसमें **3 अत्यंत दुर्लभ प्रतिबंधित रेंज स्थानिक पक्षी प्रजातियां** भी हैं।
- **स्थानीय लोगों की चिंताएं:** स्थानीय जनजातियों जैसे- **अदि और इदु मिश्मी** ने इस परियोजना का विरोध किया है। उनका मानना है कि इससे उन्हें भूमि का नुकसान होगा और उन्हें विस्थापित कर दिया जाएगा।

अन्य सुर्ख़ियां

सर्च एंड रेस्क्यू एड टूल (SARAT)

केरल तट से दूर एक **कंटेनर जहाज में आग लगने के बाद, भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS) ने बहाव और तेल रिसाव की एडवाइजरी** जारी की है।

- INCOIS ने कंटेनरों और मलबे के संभावित बहाव पैटर्न को ट्रैक करने के लिए **अपना सर्च एंड रेस्क्यू एड टूल (SARAT)** भी सक्रिय कर दिया है।

SARAT के बारे में

- यह टूल **'पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन (ESSO)-INCOIS' द्वारा विकसित** किया गया है।
  - ESSO-INCOIS **केंद्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत** कार्य करता है।
  - यह टूल **'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत** प्रारंभ और विकसित किया गया है।
- **उद्देश्य:** समुद्र में **संकट में फंसे व्यक्तियों/ जहाजों की पहचान और खोजबीन से जुड़े कार्यों** को कम-से-कम समय में पूरा करने में सहायता प्रदान करना।
  - यह **भारतीय तटरक्षक बल, भारतीय नौसेना और तटीय सुरक्षा पुलिस के अभियानों को सहयोग** प्रदान करता है।
- **कार्यप्रणाली:** यह **हाई-रिज़ॉल्यूशन वाले क्षेत्रीय महासागरीय मॉडलिंग सिस्टम** का उपयोग करता है, जिसे **INCOIS में स्थापित सुपर कम्प्यूटर्स की मदद से तैयार** किया जाता है।

हुदैदा बंदरगाह

इजराइल ने यमन के हुदैदा बंदरगाह पर पहला नौसैनिक हमला किया है।

हुदैदा बंदरगाह के बारे में

- **अवस्थिति:** यह बंदरगाह **पश्चिमी यमन में, रेड सी (लाल सागर) के तट पर** स्थित है।

- **महत्व:** यमन में लगभग **70% आयात और 80% मानवीय सहायता हुदैदा, सालिफ और रास ईसा** बंदरगाहों के माध्यम से पहुँचती है। इस तरह यह बंदरगाह व्यापार और मानवीय सहायता, दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सेंट सोफिया कैथेड्रल

रूसी हमले में कीव में स्थित सेंट सोफिया कैथेड्रल को नुकसान पहुंचा है।

संत सोफिया कैथेड्रल के बारे में

- **अवस्थिति:** यह यूक्रेन की राजधानी **कीव** में स्थित है। यह यूनेस्को के **विश्व धरोहर स्थल** सूची में भी शामिल है।
- **निर्माण:** इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में हुआ था। इसे **यूक्रेन की राजसत्ता और आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक** माना जाता है।
- **सूचीबद्ध:** यूनेस्को ने 1990 में **स्थापत्य और सांस्कृतिक महत्त्व के लिए इसे सूचीबद्ध** किया था। यूनेस्को इसे "**न्यू कॉन्स्टेंटिनोपल**" विजन के हिस्से के रूप में वर्णित करता है।
- **स्थापत्य शैली:** इसकी स्थापत्य शैली में **बाईजेंटीयन और पूर्वी ऑर्थोडॉक्स** का मिश्रण है।
- **महत्त्व:** **पूर्वी ईसाई स्थापत्य और तीर्थयात्रा परंपराओं** को दिशा देने में इसकी भूमिका की वजह से इसका **सार्वभौमिक महत्त्व** है।

वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (FSDC)

हाल ही में, केंद्रीय वित्त मंत्री ने **वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद की 29वीं बैठक** की अध्यक्षता की।

वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (FSDC) के बारे में

- **स्थापना:** यह भारत सरकार द्वारा **दिसंबर 2010** में गठित **उच्च-स्तरीय गैर-सांविधिक संस्था** (non-statutory body) है।
- **उद्देश्य:** इसका मुख्य उद्देश्य **वित्तीय स्थिरता को बनाए रखने** और वित्तीय क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने वाले तंत्र को मजबूत और संस्थागत बनाना है।
- **संरचना:** इसकी **अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री** करते/ करती हैं। इसकी बैठकों में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के गवर्नर, केंद्रीय वित्त सचिव, वित्तीय सेवाओं के सचिव, मुख्य आर्थिक सलाहकार, तथा SEBI, IRDAI व PFRDA के अध्यक्ष शामिल होते हैं।
- **FSDC की उप-समिति:** FSDC के अंतर्गत एक उप-समिति का गठन किया गया है, जिसकी अध्यक्षता RBI के गवर्नर करते हैं।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM)

CAQM, CSIR-CRRI, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (SPA) ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में धूल से होने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए **शहरी सड़क पुनर्विकास हेतु समझौता ज्ञापन** पर हस्ताक्षर किए।

NCR और आस-पास के क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) के बारे में

- **स्थापना:** CAQM एक **वैधानिक संस्था** है। इसका गठन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और इसके आस-पास के क्षेत्रों में **वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग अधिनियम 2021** के तहत किया गया है।
- **नोडल मंत्रालय:** केंद्रीय **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय**।
- **मुख्यालय:** **दिल्ली**
- **भूमिका और शक्तियां:** **राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और इसके आस-पास के क्षेत्रों में** वायु की गुणवत्ता बनाए रखने और इसमें सुधार के उद्देश्य से सभी आवश्यक उपाय करना, निर्देश जारी करना आदि।
  - NCR के आस-पास के क्षेत्रों का अर्थ **हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश** राज्यों के कुछ क्षेत्रों से है।

KATRIN एक्सपेरिमेंट

कार्ल्सरुहे ट्रिटियम न्यूट्रिनो (KATRIN) एक्सपेरिमेंट ने **ट्रिटियम मॉलिक्यूल** के विघटन का बारीकी से अवलोकन किया है। इससे **न्यूट्रिनो के द्रव्यमान का अनुमान** लगाया जा सकता है।

KATRIN प्रयोग के बारे में

- **अवस्थिति:** KATRIN एक्सपेरिमेंट **जर्मनी में** स्थित है।
- **लक्ष्य:** इसका मुख्य लक्ष्य **न्यूट्रिनो के पूर्ण द्रव्यमान का निर्धारण** करना है, जो ब्रह्मांड में सबसे रहस्मयी कणों में से एक हैं।

न्यूट्रिनो के बारे में

- यह अब तक ज्ञात सबसे **हल्का कण (पार्टिकल)** है।
- न्यूट्रिनो विद्युत रूप से **उदासीन (neutral)** और अन्य **पदार्थों के साथ अभिक्रिया करने में कमजोर** है। इसलिए **इसका पता लगाना बेहद मुश्किल** होता है।

कैथेप्सिन B

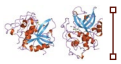

राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (NIAB) के शोधकर्ताओं ने पाया है कि 'कैथेप्सिन B' (Cat B) नामक एक कोशिकीय प्रोटीन की गतिविधि को कम करने से **अंडाशय रिजर्व को बनाए रखने में मदद** मिलती है।

कैथेप्सिन B के बारे में

- **प्रकृति:** कैथेप्सिन B एक **लाइसोसोमल सिस्टीन प्रोटीज़** है।
- **कार्य:** यह **प्रोटीन टर्नओवर, एंटीजन प्रोसेसिंग और एपोप्टोसिस (ऊतक विनियमन के लिए प्रोग्राम्ड कोशिका मृत्यु)** में शामिल होता है।
- **स्थान:** यह मुख्य रूप से **लाइसोसोम** में पाया जाता है।
  - लाइसोसोम झिल्ली से घिरे कोशिकांग होते हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के एंजाइम होते हैं जो सभी प्रकार के जैविक पॉलिमर्स जैसे- प्रोटीन्स, न्यूक्लिक एसिड्स, कार्बोहाइड्रेट्स और लिपिड्स को तोड़ने में सक्षम हैं।
- **सबस्ट्रेट्स:** यह **बाह्य कोशिकीय मैट्रिक्स प्रोटीन (जैसे कोलेजन, फाइब्रोनेक्टिन) को निम्नीकृत करता** है।
- **रोगों में भूमिका:** यह **कैंसर मेटास्टेसिस, सूजन और न्यूरोडीजेनेरेटिव विकारों** के लिए उत्तरदायी होता है।

पोसोन पोया (Poson Poya)

श्रीलंका में 10 जून को पवित्र पोसोन पोया पर्व मनाया गया। यह पर्व आज से **2,000 साल पहले श्रीलंका में बौद्ध धर्म के ऐतिहासिक आगमन के उपलक्ष्य में** मनाया जाता है।

पोसोन पोया पर्व के बारे में

- **अवसर:** यह पर्व श्रीलंका में **हर साल जून माह की पूर्णिमा के दिन** मनाया जाता है।
- **महत्व:**
  - यह पर्व उस **प्रथम उपदेश की स्मृति में मनाया जाता है जो सम्राट अशोक के पुत्र अर्हत महेन्द्र ने राजा देवानंपियतिस्स को मिहिंतले** में दिया था।
  - पोसोन पोया पर्व के दौरान **अहिंसा के मूल्य को प्राथमिक मूल्य के रूप में रेखांकित** किया जाता है। संघर्ष से ग्रस्त दुनिया में, यह पर्व याद दिलाता है कि '**अहिंसा**' - **एक कालातीत सिद्धांत है जो सभी के लिए जीवन और स्वतंत्रता की रक्षा करता है।**
- महत्व की दृष्टि से, बौद्ध धर्मावलंबियों के लिए "पोसोन पोया" **वेसाक के बाद दूसरा सबसे पवित्र दिवस** है।

सुर्ख़ियों में रहे व्यक्तित्व

संत कबीरदास (लगभग 14वीं-15वीं शताब्दी)

11 जून को देशभर में संत कबीरदास जी की जयंती मनाई गई।

संत कबीरदास के बारे में

- **जन्म स्थान:** वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

प्रमुख योगदान

- **मूल विश्वास:** उन्होंने **कर्मकांड, जातिवाद और मूर्ति पूजा का विरोध** किया। उन्होंने **एक ईश्वर** की भक्ति **(निर्गुण भक्ति)** पर जोर दिया।
- **संकलित पद:** कबीर के पदों को तीन अलग-अलग लेकिन एक-दूसरे से जुड़ी परंपराओं में संकलित किया गया है:
  - **कबीर बीजक** को वाराणसी और उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर **कबीर पंथ** (कबीर का पंथ या उप-संप्रदाय) द्वारा संरक्षित किया गया है।
  - **कबीर ग्रंथावली** राजस्थान के **दादूपंथ** से जुड़ी है।
  - उनकी कई रचनाएं **गुरु अर्जुन देव द्वारा संकलित आदि ग्रंथ साहिब** में भी मिलती हैं।
- **भाषा और बोलियाँ:** कबीर की कविताएं कई भाषाओं और बोलियों में संरक्षित हैं:
  - कुछ **निर्गुण कवियों की रचनाएं** विशेष भाषा '**संत भाषा**' ('**सधुक्कड़ी**') में रचित है।
  - अन्य कविताएं **उलटबांसी** में मिलती हैं। उलटबांसी रचनाओं में कबीर ने अपनी बात को घुमा-फिरा कर और प्रचलित अर्थ से एकदम विपरीत अर्थ में अभिव्यक्ति की है।